लोगो !

हिसाब का समय निकट आ चुका है

लेखक
सैयद जलालुद्दीन उमरी

अनुवादक
गुलज़ार सहराई

बिसमिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम।

"दयावान, कृपाशील ईश्वर के नाम से।"

लोगो! हिसाब का समय निकट आ चुका है

"लोगों के हिसाब का समय निकट आ चुका है, परन्तु वे लापरवाही में मुहँ मोड़े हुए हैं। जो नई नसीहत भी उनके रब की ओर से उनके पास आती है, उसे वे खेल-कूद में लगे हुए सुनते हैं। उनके दिलों पर लापरवाही छाई हुई है, ये ज़ालिम आपस में कानाफूसी करते हैं कि यह व्यक्ति तो तुम ही जैसा एक मनुष्य है। फिर क्या तुम इसके जादू में आँखों देखते फँस जाओगे? पैग़म्बर ने (इसके जवाब में) कहा कि मेरा 'रब' हर उस बात को जानता है जो आकाश और धरती में हो, और वह सुनने और जाननेवाला है।" (क़ुरआन 21 : 1-4)

ये क़ुरआन की सूरा 21 (अंबिया) की आरम्भिक आयतें हैं। इनमें हला ही वाक्य "लोगों के हिसाब का समय निकट आ चुका है।" ंका देनेवाला है। प्रत्येक मुसलमान का आख़िरत (परलोक) पर ज़रूर ान होता है। आख़िरत (परलोक) पर ईमान इस्लाम की एक लाज़मी र्त है। इसके बिना आदमी मुसलमान नहीं हो सकता। आख़िरत का र्थ यह है कि यह दुनिया एक दिन ख़त्म हो जाएगी और एक नई निया वुजूद में आएगी। वहाँ तमाम इनसान, आदि (शुरू) से अंत तक, ल्लाह के सामने पेश होंगे, उनकी पूरी ज़िन्दगी का हिसाब-किताब गा और उसी के अनुसार वे अच्छा बदला या सज़ा पाएगे। वहाँ का

अच्छा बदला और सज़ा दोनों हमेशा बाक़ी रहनेवाले होंगे। जिस दि यह दुनिया ख़त्म होगी और आख़िरत की दुनिया वुजूद में आएगी व दिन क़ियामत का दिन होगा।

आख़िरत के अक़ीदे का ख़ुदा के अक़ीदे से गहरा सम्बन्ध है। ख़ु है तो आख़िरत भी है। आख़िरत का इनकार वही करेगा जो ख़ुदा व इनकार करता हो। कोई ख़ुदा को माने और आख़िरत को न माने, य सम्भव नहीं है। बुद्धि इसे स्वीकार नहीं करती। ख़ुदा है तो एक दि ऐसा अवश्य आना चाहिए जिसमें देखा जाए कि किसने ख़ुदा को मा और किसने नहीं माना? जिसने ख़ुदा को माना उसने उस आज्ञापालन किया या नहीं? जिसने उसका इनकार किया तो क इनकार किया और क्यों उसी रास्ते पर जीवन भर चलता रहा? पि इसी पर बात समाप्त न हो जाए, बल्कि यह बात भी बुद्धि-संगत है धरती और आकाश के स्रष्टा और समस्त जगत् के सम्राट का जिस आज्ञापालन और फ़रमाँबरदारी की और उसके लिए हर प्रकार के क सहे, उसे पुरस्कार और ऐश्वर्य से सम्मानित किया जाए और य पुरस्कार उस हस्ती की ओर से हो और उसकी महानता के अनुकूल जिसके निर्देशों की उसने जीवन भर पाबन्दी की और जिस नाफ़रमानी से वह हमेशा बचता रहा। इसी प्रकार जिसने उसका इनक किया और उसकी नाफ़रमानी में पूरी उम्र लगा रहा, उससे पूछ-गछ और उसके जुर्म के मुताबिक़ उसे दण्ड मिले।

आख़िरत के अक़ीदे का हमारे जीवन से गहरा सम्बन्ध है और व उसके हर पक्ष को प्रभावित करता है। आख़िरत का अक़ीदा ख़ुदा अक़ीदे को मज़बूत करता और उसे एक जीवित सच्चाई बना देता है वह इनसान को ख़ुदा का समीप्य प्रदान करता है और उससे जोड़ता है यह एक ओर ख़ुदा से प्रेम और अनुरागमय सम्बन्ध को दिल में उतार

ौर दूसरी ओर ख़ुदा का भय और डर पैदा करता है। उसकी यातना ा पुण्यफल, उसकी दया व कृपा और उसके कोप-प्रकोप के एहसास को ागृत रखता है। यह अक़ीदा उसे गुनाह और पाप की राह में बढ़ने से ोकता और उसको ख़ुदा के आज्ञापालन की राह पर लगाए रखता है। ाह उसके पुरस्कारों की चाह और उसकी अनुकम्पा की प्यास पैदा ारता रहता है। यह अक़ीदा उसके अज़ाब (यातना) से कभी निडर होने ाहीं देता। यह उसकी याद से हर समय दिल की दुनिया को आबाद ारखता है।

आख़िरत का अक़ीदा कोई बेजान अक़ीदा नहीं है। यह अपने अन्तःकरण में अत्यन्त प्रबल क्रान्तिकारी प्राणतत्व (रूह) रखता है। यह अक़ीदा हृदय और मस्तिष्क में बैठ जाता है तो इनसान को एक दम बदलकर रख देता है। उसके जीवन और चरित्र को पवित्रता और सद्मार्ग प्रदान करता है। वह उसे भलाई का ध्वजावाहक बनाता है और बुराई से लड़ने पर तत्पर करता है। उसके अन्दर नेकी और धर्मपरायणता (तक़वा) की रूह फूँकता है और बुराई और गुनाह से नफ़रत और दूरी पैदा करता है। यह अक़ीदा दुनियापरस्त (भौतिकवादी) इनसान को आख़िरत का तलबगार बनाता है। इनसान को अल्लाह के आदेशों का पाबन्द, उसकी शिक्षाओं पर अमल करनेवाला और उसके धर्म का ध्वजावाहक बनाता है। इस अक़ीदे से इनसान धर्म का अमीन और संरक्षक और उसकी ओर बुलानेवाला तथा उसका ध्वजावाहक बनकर उभरता है। यह अक़ीदा इनसान के अन्दर धर्म की सेवा और उसकी प्रतिष्ठा को सर्वोपरि करने और उसके लिए मरने-मिटने की भावना उत्पन्न करता है। इस अक़ीदे से इनसान के अन्दर धैर्य और दृढ़ता का गुण पैदा होता है, हिम्मत व हौसला और ख़ुलूस (निष्ठा) की दौलत मिलती है, इनसानों की निःस्वार्थ सेवा, त्याग और बलिदान का

जज़्बा उभरता है। इससे वह इनसान अस्तित्व में आता है, जिसव तस्वीर क़ुरआन के अन्दर इन शब्दों में खींची गई है —

"बेशक, वे लोग जो अपने रब के ख़ौफ़ से डरते रहते हैं और वे जो अपने रब की आयतों पर ईमान रखते हैं और वे जो देते हैं, जो कुछ देते हैं लेकिन उनके दिल कांपते रहते हैं कि उन्हें अपने रब की ओर पलटकर जाना है। ये लोग हैं जो नेकियों में तेज़ी दिखाते हैं और आगे बढ़कर उनको पा लेते हैं। हम किसी पर उसकी सहन-शक्ति से अधिक बोझ नहीं डालते, और हमारे पास एक किताब है जो सच्चाई और न्याय के साथ बोलेगी और उनपर ज़ुल्म नहीं होगा।" (क़ुरआन, 23 : 57-62)

ज़रा सोचिए ! यदि किसी को सही अर्थों में इस बात का पक्व यक़ीन हो और उसकी नस-नस में यह विश्वास ख़ून बनकर दौड़ र हो कि मरने के बाद एक दिन उससे पूछ-गछ होगी। एक-दो दिन व नहीं, महीने-दो-महीने की नहीं, बल्कि जब से वह समझबूझ की स्थि में पहुँचा, उस समय से लेकर मरते दम तक उसके पूरे जीवन औ जीवन के एक-एक पल का हिसाब होगा, तो वह क़ियामत के उ भयावह दिन को कैसे भुला सकता है? उसे भूलकर कैसे ज़िन्द गुज़ार सकता है? किसी व्यापारी को केवल सुन-गुन मिल जाए वि कल आयकर अधिकारी आनेवाला है तो वह घबरा जाता है और तुर लेखा-जोखा ठीक करने लगता है। इसी से आप सोच सकते हैं वि जिस व्यक्ति को यह पूर्ण विश्वास हो कि उसका कोई भी का अल्लाह तआला से छिपा नहीं है, वह उसकी समस्त गतिविधियों औ काम की ख़बर रखता है, उसके और ख़ुदा के बीच कोई परदा नहीं उसकी हर चीज़ उसपर प्रकाशमान दिन की तरह स्पष्ट है, वह जान और ख़बर रखनेवाला ख़ुदा आख़िरत में उसके पल-पल का हिसा

लेगा और उसके हर छोटे-बड़े कर्म का उसको बदला देगा, तो बताइए उसकी ज़िन्दगी ग़फ़लत और बेख़बरी में कैसे गुज़रेगी ? उसपर ग़फ़लत और बेख़बरी उसी वक़्त प्रभावी हो सकती है जबकि वह आख़िरत पर यक़ीन न रखता हो। हाँ इसकी सम्भावना है कि एक व्यक्ति आख़िरत पर ईमान और विश्वास का ज़बान से इक़रार करे और दिल इस विश्वास से खाली हो, तो वह आख़िरत का दावा करने के बावजूद ख़ुदा से बे-ख़ौफ़ हो सकता है। लेकिन सही अर्थों में आख़िरत का यक़ीन जिसके दिल में बैठ चुका हो उसके बारे में यह सोचा नहीं जा सकता कि वह ख़ुदा और आख़िरत को भुला बैठेगा और गुनाह और बुराई से उसका दामन प्रदूषित रहेगा। वह इस दुनिया की तमाम उथल-पुथल और अपनी सारी व्यस्तताओं के बावजूद उस दिन के ख़ौफ़ से काँपता रहेगा। क़ुरआन में है—

> "(अल्लाह के इन घरों में) वे लोग हैं, जिन्हें व्यापार और क्रय-विक्रय अल्लाह की याद से, नमाज़ क़ायम करने और ज़कात देने से ग़ाफ़िल नहीं करता। वे उस दिन से डरते रहते हैं, जिस दिन कि दिल उलट जाएँगे और आँखें पथरा जाएँगी।" (क़ुरआन, 24 : 37)

क़ियामत का एक समय निर्धारित है, उसे टाला नहीं जा सकता। ज़मीन और आसमान और पूरी सृष्टि उस दिन की प्रतीक्षा में है। जो दिन गुज़र रहा है वह क़ियामत को निकट से अति निकट कर रहा है और उसकी अवधि कम होती जा रही है। प्रतिदिन उदय होनेवाला सूरज बता रहा है कि उसके आने में एक दिन की कमी घटित हो चुकी है, परन्तु आश्चर्य है कि इसके बावजूद भी इनसान बेख़बरी की नींद सो रहा है और जब इसका स्मरण उसे कराया जाता है तो वह इतनी बेपरवाही से सुनता है, जैसे यह कोई महत्वपूर्ण बात नहीं है या ऐसी

ख़बर नहीं है जो उल्लेखनीय हो और जिसपर ध्यान दिया जाए उसकी ओर इसका ध्यान होता और अपने अंजाम की उसे चिंता होती तो ग़फ़लत और लापरवाही के परदे चाक होते; वह चौकन्ना होता फूँक-फूँककर क़दम रखता, अल्लाह के अज़ाब (दण्ड) का ख़ौफ़ उसका दामन पकड़ लेता और अल्लाह की रहमत की उसे तलाश होती लेकिन दुनिया ने उसे अपने घेरे में ले रखा है और आख़िरत का ख़याल निगाहों से ओझल हो गया है। लेकिन वह समय बड़ी तेज़ी से दौड़ा चला आ रहा है और उसके आने में देर नहीं है, जब इस ग़फ़लत के परिणाम उस की आँखों के सामने होंगे और वह उनको भुगतने पर विवश होगा। काश, वह जानता कि वह उस समय कितने घाटे में होगा और कितनी नाकामियाँ उसके हिस्से में आएँगी !

"निस्सन्देह, वे लोग जो हमसे मिलने की आशा नहीं रखते और दुनिया की ज़िन्दगी पर प्रसन्न और सन्तुष्ट हैं और जो हमारी आयतों से ग़ाफ़िल और बेख़बर हैं, उन सबका ठिकाना नरक की आग है, उस कमाई के बदले जो वे कमा रहे थे।"

(क़ुरआन 10 : 7-8)

इस विषय की दो और आयतें प्रस्तुत हैं—

"सच्चाई यह है कि जो लोग आख़िरत पर ईमान नहीं रखते, हमने उनके कर्मों को उनकी निगाहों में शोभायमान बना दिया है। यही लोग हैं जिनके लिए बुरी यातना है और वही आख़िरत में सबसे ज़्यादा घाटा उठानेवाले होंगे।"

(क़ुरआन 27 : 4-5)

पवित्र क़ुरआन इस वास्तविकता को नए-नए ढंग से और शैलियाँ बदल-बदलकर समझाता है कि क़ियामत आकर रहेगी और इनसा

अपने अंजाम से अवश्य ही दोचार होगा। यह अल्लाह का फ़ैसला है। किसी में यह ताक़त नहीं है कि वह उसके फ़ैसले को बदल दे या उसको लागू होने से रोक दे। लेकिन अफ़सोस! नादान इनसान इसे नामुमकिन बात समझकर रद्द कर देता है और इसे इस तरह देखता है जैसे यह सब कुछ उसके वश में नहीं है तो ख़ुदा के वश में भी नहीं है। काश, वह जानता कि खुदा की सम्भावनाओं में से कोई चीज़ बाहर नहीं है! वह अबाध-शक्तिवाला है। वह जो चाहे और जब चाहे हो सकता है। जिस ख़ुदा ने यह विशाल संसार बनाया है और उसकी एक व्यवस्था निश्चित की है, उसके लिए उसको तोड़कर एक नई दुनिया, नए सिद्धान्तों और नियमों के अंतर्गत अस्तित्व में लाना असम्भव कैसे हो जाएगा?

> "क्या ये लोग नहीं देखते कि जिस अल्लाह ने आसमानों और ज़मीन को पैदा किया है और उसके पैदा करने की वजह से उसे कोई थकान नहीं हुई, वह इस बात की भी सामर्थ्य रखता है कि मुर्दों को ज़िन्दा करे। क्यों नहीं? निस्सन्देह वह हर चीज़ की सामर्थ्य रखता है।" (क़ुरआन 46 : 33)

इसका एक और पहलू यह है कि इस सच्चाई को बताने और समझानेवाला कोई सामान्य व्यक्ति नहीं वरन् स्वयं ख़ुदा का पैग़म्बर है। वह हस्ती है जिसके सदाचार, सच्चाई और ईमानदारी को दोस्त ही नहीं दुश्मन भी स्वीकार करते थे, जो केवल अपनी जाति के लिए ही नहीं, बल्कि पूरी मानवता के कल्याण के लिए बैचेन और व्याकुल रहता था, जो दिन-रात तड़प रहा था कि मानव जाति कहीं ख़ुदा के अज़ाब की चपेट में न आ जाए। वह अपने मन से नहीं, अपनी संकल्पनाओं और अपनी परम्पराओं के तहत नहीं; बल्कि ख़ुदा की ओर से कह रहा था कि क़ियामत आएगी और अवश्य आएगी। इसे खेल और तमाशा

न समझो। यह किसी मैच की हार-जीत की ख़बर या कारोबार के उतार-चढ़ाव की सूचना नहीं थी बल्कि एक ऐसे दिन की ख़बर थी जिस दिन मनुष्य के भविष्य का फ़ैसला होगा और हमेशा के लिए होगा। इसके बाद या तो नेमत भरी जन्नत होगी या नरक की आग। क़ुरआन अफ़सोस के साथ कहता है कि एक सदा सच बोलनेवाले और ख़ुदा के पैग़म्बर की ज़बान से इतनी महत्वपूर्ण ख़बर सुनने के बाद भी ये अत्याचारी इसे मज़ाक़ में टाल रहे हैं। आपस में कानाफूसी कर रहे हैं कि यह भी तो हम ही जैसा एक व्यक्ति है। इसमें क्या विशेष बात है कि हम इसे पैग़म्बर मान लें और इसकी बात पर विश्वास कर लें। क्या इसके पास सम्पत्ति, ऐश्वर्य, पद और अधिकार है? क्या चीज़ है जो इसे सरदारी और नेतृत्व के योग्य बनाती है?आख़िर यह कैसे पैग़म्बर बन गया, और अल्लाह की तरफ़ से बोलने लगा? यह पैग़म्बर और उसकी सच्चाई के विरुद्ध कोई तर्क न था। इससे उसकी सच्चाई का खण्डन नहीं होता था। ये अन्धी भावनाएँ थीं यह अनुचित पक्षपात था, यह परम्पराओं के अनुपालन की कट्टरता थी जो एक सच्चे और अमानतदार के विरोध पर उभार रही थी और इसके लौकिक और पारलौकिक दुष्परिणामों को देखने नहीं दे रही थी। यह सब कुछ हो रहा था। इसके बावजूद पैग़म्बर (सल्ल०) की बातें दिलों पर जादू की तरह प्रभाव डाल रही थीं और दुश्मनों के क्षेत्रों से जीवन के प्रति गंभीर और पुनीतात्माएँ टूट-टूटकर आ रही थीं और सत्य और वास्तविकता को दिलो जान से क़बूल कर रही थीं। विरोधी इसे देखकर चकित थे। कहते थे, "यह तो जादूगर है, जादू कर रहा है। इससे दूर रहने ही में भलाई है। यह तो कोई बुद्धिमानी नहीं कि जानते-बूझते किसी जादूगर के पीछे हम चल पड़ें।" क़ुरआन ने उनकी इस जहालत और नादानी का कोई जवाब नहीं दिया। उसने कहा कि तुम्हारी बातें, तुम्हारी

क़ानाफूसियाँ और तुम्हारी योजनाएँ, चाहे वे धरती और आकाश के किसी भी कोने में हों, अल्लाह तआला उनसे भली-भाँति परिचित है। वही उनका हिसाब लेगा —

> "अल्लाह की तरफ़ तुम सबको पलटकर जाना है, वह हर चीज़ की सामर्थ्य रखता है। सुन लो ! ये लोग अपने सीनों को मोड़ लेते हैं, ताकि उस (पैग़म्बर) से छिप जाएँ। सुन लो ! जिस समय ये कपड़ों से ख़ुद को ढाँप लेते हैं, (उस समय भी वह जान रहा होता है।) वे जो कुछ छिपाते और जो प्रकट करते हैं, उस सबसे वह परिचित है। वह दिलों की बातों को भी जानता है।" (क़ुरआन 11 : 4-5)

एक और स्थान पर यह बात और अधिक स्पष्टता के साथ आई है। कहा गया है —

> "वे कहते हैं कि यदि तुम सच्चे हो तो बताओ कि यह अज़ाब का वादा कब पूरा होगा? तुम उनसे कह दो कि कुछ दूर नहीं कि तुम्हारे पीछे ही उस अज़ाब (यातना) का एक हिस्सा आ जाए, जिसके लिए तुम जल्दी कर रहे हो। और निश्चय ही तुम्हारा रब लोगों पर अनुग्रह और उपकार करनेवाला है। लेकिन उनमें से प्रायः कृतज्ञता नहीं प्रकट करते। और निश्चय ही तुम्हारा रब भली-भाँति जानता है जो कुछ उनके सीनों में छिपा हुआ है और जो कुछ वे प्रकट कर रहे है और आकाश और धरती में जो चीज़ भी निगाहों से ओझल है, वह एक खुली किताब में मौजूद है।" (क़ुरआन 27 : 71-75)

क़ियामत आएगी और अवश्य आएगी । जब आएगी तो यह दुनिया जिस तरह ऊपर-नीचे और उलट-पलट हो जाएगी और इसके

स्थान पर जो नई दुनिया अस्तित्व में आएगी, उसकी दशा का क़ुरआन मजीद में विभिन्न स्थानों पर उल्लेख हुआ है।

एक जगह फ़रमाया गया—

"जब सूरज लपेटकर रख दिया जाएगा, और जब तारे प्रकाशहीन हो जाएँगे, और जब पहाड़ चलाए जाएँगे, और जब दस महीने की ऊँटनियाँ छुटी फिरेंगी, और जब जंगली जानवर इकट्ठा कर दिए जाएँगे, और जब समुद्र भड़का दिए जाएँगे, और जब जानें एक-दूसरे से जोड़ दी जाएँगी, और जब उस लड़की से पूछा जाएगा जिसे ज़िन्दा ज़मीन में गाड़ दिया गया था कि वह किस अपराध में मारी गई, और जब कर्मपत्र (आमाल नामे) फैला दिए जाएँगे, और जब आसमान का परदा हटा दिया जाएगा, और जब जहन्नम भड़काई जाएगी, और जब जन्नत निकट लाई जाएगी, तो हर कोई जान लेगा कि क्या लेकर आया है।" (क़ुरआन 81 : 1-14)

क़ुरआन में एक अन्य स्थान पर है —

"और जब आसमान फट जाएगा, और जब तारे बिखर जाएँगे, और जब समुद्र उबल पड़ेंगे, और क़ब्रें उलट दी जाएँगी तब हर व्यक्ति जान लेगा कि क्या उसने आगे भेजा और क्या पीछे छोड़ा?" (क़ुरआन 82 : 1-5)

कितना भयावह दृश्य है यह, क्या दशा होगी उस दिन जब यह समस्त जगत्-व्यवस्था छिन्न-भिन्न हो जाएगी! धरती और आकाश अत्यन्त पराभव और टूट-फूट से दोचार होंगे। सूरज, चाँद और सितारे प्रकाशहीन हो जाएँगे। ग्रह और सितारे अपना आकर्षणबल खोकर एक-दूसरे से टकरा जाएँगे। समुद्रों में आग लग जाएगी। पहाड़

चूर-चूर होकर उड़ने लगेंगे। जंगल के हिंसक पशु अपनी पशुता और हिंसा भूल जाएँगे। क़ीमती चौपायों और दूध देनेवाले जानवरों को पूछनेवाला कोई न होगा। क़ब्रें उखाड़कर फेंक दी जाएँगी और आदमी की नज़रों के सामने जन्नत (स्वर्ग) और दोज़ख़ (नरक) होगी। एक ओर जन्नत अपनी तमाम नेमतों और सुविधाओं के साथ बिलकुल निकट मौजूद होगी और दूसरी ओर अग्नि-कुण्ड नरक अपने भयानक रूप के साथ सामने होगा।

हमारी यह धरती उस समय जिन हालात से गुज़रेगी उसका कुछ और विवरण सुनिए —

"जब धरती हिला डाली जाएगी और जब धरती अपने बोझ निकाल देगी और इनसान कहेगा कि इसको क्या हो गया है? उस दिन वह अपनी पूरी दशा बयान करेगी, क्योंकि तेरे रब ने इसका आदेश उसे दिया है। उस दिन लोग विक्षिप्त स्थिति में (क़ब्रों से निकलकर हश्र के मैदान की ओर) लौटेंगे, ताकि उनको उनके कर्मों को दिखाया जाए। तो जिसने कण भर भी भलाई की होगी, वह उसको देख लेगा और जिसने कण भर भी बुराई की होगी वह भी उसको देख लेगा" (क़ुरआन- 99 : 1-8)

मतलब यह है कि इस भूमंडल को एक ज़बरदस्त भूचाल उलट-पलट करके रख देगा। धरती अपने धन-दौलत के भण्डार और खनिज पदार्थ बहार निकाल देगी। धरती के सीने पर दुष्कर्मी भी चल फिर रहे हैं और सुकर्मी भी। सभी के लिए उसका सीना खुला हुआ है। यही नहीं बल्कि बहुत-से दुष्कर्मों पर वह परदा भी डाले हुए है। उस दिन वह उन सभी छिपी चीज़ों को बाहर कर देगी और उन हालात को स्पष्ट रूप से बयान करेगी जो उसपर बीते हैं। इनसान का क़दम

जहाँ पड़ा है, वह भू-भाग बताएगा कि ये क़दम किस लिए उठे थे भलाई के रास्ते में या बुराई के रास्ते में? सारे इनसान इधर-उधर दौड़ते फिरेंगे। सम-विचार और सम-स्वभाव के गिरोह बनते चले जाएँगे। हर एक से छोटी-बड़ी भलाई या बुराई जो हुई है, वह अपने परिणामों के साथ सामने होगी।

क़ियामत के दिन इनसान की जो हालत होगी, उसका उल्लेख संक्षिप्त रूप में इन आयतों में आया है। दूसरे स्थानों पर इन्हें विस्तार से बयान किया गया है।

कहा गया —

> "ऐ लोगो ! अपने रब से डरो, बेशक क़ियामत का भूचाल बड़ी (भयानक) चीज़ है। जिस दिन तुम उसे देखोगे, दशा यह होगी कि हर दूध पिलानेवाली माँ अपने दूध पीते बच्चे को भूल जाएगी और हर गर्भवती अपना गर्भ गिरा देगी। तुम लोगों को बेहोश देखोगे, लेकिन वे बेहोश नहीं होंगे, बल्कि अल्लाह का अज़ाब ही सख़्त होगा (जिससे यह दशा होगी)।"
>
> (क़ुरआन 22 : 1-2)

ये आयतें समस्त इनसानों को पुकार रही हैं कि ऐ इनसानो! अल्लाह का भय और तक़वा अपना लो। उससे डरकर चलो। इसलिए कि क़ियामत आनेवाली है। उसका भूचाल बड़ा ही भयावह होगा। उसकी कल्पना भी नहीं की जा सकती। दुनिया में छोटे-बड़े भूचाल तो आते ही रहते हैं। उनकी बरबादी और तबाही से सभी परिचित हैं। अभी वर्तमान में गुजरात में भूकम्प आया। यह सारे संसार में नहीं आया और न पूरे भारत में आया; बल्कि भारत के एक कोने में आया। इससे जो भय व आतंक उत्पन्न हुआ, जो भगदड़ मची, जिस प्रकार

लोग मकानों और कारोबार को छोड़कर भागे, उन सबका विवरण हमारे ज़ेहनों में ताज़ा है। भूकम्प के बाद भी इतना आतंक छाया रहा कि लोग अपने टूटे-फूटे और कमज़ोर मकानों में जाने और उन्हें आबाद करने के लिए तैयार नहीं थे। उनपर यह ख़तरा हर समय छाया रहता था कि न मालूम कब क्या हो जाए। क़ियामत के भूचाल से इस भूचाल की कोई तुलना ही नहीं है। कण और पर्वत का भी अनुपात नहीं है। उसकी दशा तो यह होगी कि दूध पिलानेवाली माँ बच्चे को भूल जाएगी। घबराहट, भय और आतंक की यह स्थिति होगी कि बच्चा माँ की गोद में होगा और उसे उसकी ख़बर न होगी। उसे यह ध्यान न होगा कि वह दूध पी रहा है या नहीं? ऐसी आवाज़ होगी और ऐसा धमाका होगा कि गर्भवती महिलाओं के पेट ख़ाली हो जाएँगे। लोग होश खो बैठेंगे, परन्तु यह बेहोशी किसी नशीली चीज़ के इस्तेमाल से न होगी, बल्कि ख़ुदा का अज़ाब (यातना) इतना सख़्त होगा कि इनसान के होश उड़ जाएँगे।

एक जगह और फ़रमाया गया —

"फिर जब वह कान फाड़ देनेवाली आवाज़ आएगी, उस दिन इनसान अपने भाई से, अपनी माँ और अपने बाप से और अपनी बीवी और अपने बेटों से भागेगा। प्रत्येक व्यक्ति ऐसी दशा में होगा कि उसे अपने अतिरिक्त किसी का होश न होगा। उस समय कुछ चेहरे चमक रहे होंगे, मुस्कराते हुए प्रसन्नचित्त और आनन्दित होंगे और कुछ चेहरे ऐसे होंगे जिनपर कालिख पुती होगी। यही (आख़िरत का) इनकार करनेवाले और गुनाहगार व बदकार हैं।" (क़ुरआन 80 : 33-42)

यह दृश्य सूरा 70 (मआरिज) में इन शब्दों में बयान किया गया

है—

"वे उसे दूर देखते हैं और हम उसे निकट देख रहे हैं। जिस दिन आसमान पिघले हुए तांबे की भांति होगा, और पहाड़ रंग-बिरंग के ऊन जैसे हो जाएँगे, कोई गहरा दोस्त किसी गहरे दोस्त को नहीं पूछेगा, जबकि सब दिखाए जाएँगे (और एक-दूसरे को अच्छी तरह पहचानेंगे)। अपराधी चाहेगा कि आज के दिन अज़ाब से बचने के लिए अपनी औलाद को, अपनी बीवी को अपने भाई को, और अपने परिवार को जिसमें वह रहता था, बदले में दे दे और फिर ख़ुद को बचाले। हरगिज़ नहीं! वह तो भड़कती हुई आग है जो खाल को निकालकर रख देगी, जो पुकारकर बुलाएगी हर उस व्यक्ति को जिसने (सच्चाई से) पीठ फेर ली और चला गया, धन जमा किया और सहेज-सहेज कर रखा।" (क़ुरआन 70 : 6-18)

उस दिन हर व्यक्ति के हाथ में उसका आमाल नामा (कर्म-प होगा। वह रिकार्ड होगा जिसमें उसका एक-एक अच्छा या बुरा क तथा हर छोटी-बड़ी नेकी और बदी लिखी होगी। अल्लाह के अच् और नेक बन्दों को उनका रिकार्ड उनके दाहिने हाथ में दिया जाएगा दुष्कर्मियों और दुराचारियों को उनका रिकार्ड (कर्म-पत्र) उनके बाएँ हा में दिया जाएगा। कितने भाग्यशाली होंगे वे जिनके दाहिने हाथ उनका कर्म-पत्र होगा और कितने अभागी होंगे वे जिनके बाएँ हाथ उनका कर्म-पत्र होगा। ज़रा उसकी तस्वीर भी क़ुरआन के आईने देखिए—

"उस दिन तुम पेश किए जाओगे। तुम्हारी कोई भी छिपी हुई बात छिपी न रह जाएगी। फिर उस दिन जिसका कर्म-पत्र

उसके दाहिने हाथ में दिया जाएगा; वह (ख़ुशी से) कहेगा, लो ! पढ़ो मेरा यह कर्म-पत्र। मैं समझता था कि मुझे अपने हिसाब का सामना करना पड़ेगा (उसके अनुसार मैंने जीवन व्यतीत किया)। वह मनोरम सुख-संपन्नता में होगा। श्रेष्ठ जन्नत में, जिसके फलों के गुच्छे झुके पड़ रहे होंगे। कहा जाएगा, खाओ-पियो मज़े से, यह बदला है तुम्हारे उन अच्छे कर्मों का जो तुमने गुज़रे हुए दिनों में किए थे। परन्तु जिसका कर्म-पत्र उसके बाएँ हाथ में दिया जाएगा, वह कहेगा; काश ! यह कर्म-पत्र मुझे न दिया जाता और मुझे मेरे हिसाब की ख़बर न होती। ऐ काश ! मौत ख़त्म कर देती (दोबारा जीवन न मिलता), मेरा माल कुछ काम न आया। मेरी सत्ता निरर्थक हुई। कहा जाएगा कि इसे पकड़ो, और तौक़ पहनाओ। फिर जहन्नम में इसे डाल दो और सत्तर गज़ लम्बी ज़ंजीर में इसे जकड़ दो। वह महान अल्लाह (परमेश्वर) पर ईमान नहीं रखता था और मुहताज और निर्धनों को खाना खिलाने पर किसी को उभारता न था। यहाँ उसका कोई मित्र न होगा और केवल घावों के धोवन के कोई भोजन न मिलेगा। उसे अपराधियों के सिवा कोई नहीं खाता है।" कुरआन 69 : 18-38

आख़िरत के इनाम एवं दण्ड का विवरण कुरआन मजीद में और भी जगहों पर है। सूरा 88 (ग़ाशिया) में इसका चित्र इस प्रकार खींचा गया है—

"क्या पहुँची तुम तक छा जानेवाली आफ़त (क़ियामत) की ख़बर ? कितने ही चेहरे उस दिन भयभीत होंगे। मेहनत कर रहे होंगे और बुरी दशा में होंगे और दहकती हुई आग में दाख़िल होंगे। खौलते हुए स्रोत से उन्हें पानी पिलाया जाएगा।

उनको केवल कंटीले झाड़-झंकाड़ खाने के लिए दिए जाएँगे, जो न तो आदमी को मोटा करेंगे और न ही भूख मिटाने के काम आएँगे। और कितने ही चेहरे उस दिन खिले हुए होंगे, अपने प्रयासों पर प्रसन्न होंगे, ऊँचे बाग़ में होंगे, उसमें कोई व्यर्थ की बात नहीं सुनेंगे। उसमें प्रवाहित स्रोत होंगे, उसमें ऊँचे तख़्त होंगे और सलीक़े से रखे हुए प्याले होंगे और बराबर लगे हुए गाव तकिये होंगे और क़ालीनें बिछी होंगी"

(क़ुरआन 88 : 1-16)

इनसान स्वयं सोच-समझकर इसी दुनिया में फ़ैसला करे और अपनी राह सुनिश्चित करे कि वह आख़िरत में किस परिणाम को पसंद कर रहा है और उसका क्या अन्त होनेवाला है ?

इस समय पूरी दुनिया अत्यन्त व्याकुलता और बेचैनी की स्थिति में है। कहीं सुकून नज़र नहीं आ रहा है। संसार के विभिन्न भागों में जंग के बादल मंडरा रहे हैं। युद्ध और आक्रामकता आग बरसा रहे हैं, अधिकारों का हनन हो रहा है, ताक़तवर कमज़ोर को अपने शिकंजे में कस रहा है, और कमज़ोर की गुहार सुननेवाला कोई नहीं है। हर ओर अत्याचार और अन्याय नंगा नाच कर रहा है। आज अत्याचार और अन्याय व्यक्तियों ही का नहीं क़ौमों का भी आचरण बन गया है। वे नैतिक मानदंड जो मानवता के लिए गौरव समझे जाते हैं, बुरी तरह पददलित हो रहे हैं। मुहब्बत, भाईचारा, निष्ठा, सहानुभूति, सच्चाई और सत्यता अमानत और ईमानदारी और वादा निभाने की प्रवृति से इनसान का रिश्ता टूट गया है। कहीं कोई अच्छाई दिखाई पड़ती भी है तो निष्ठा, निस्स्वार्थ भावना और शुभचिंतन से ख़ाली है। दिखावा, स्वार्थ, निजी और साम्प्रदायिक हितों ने इसकी सुन्दरता छीन ली है। रिश्वत,

चोरी, डकैती, रक्तपात और लूटमार का बाज़ार हर तरफ़ गर्म है। शराब और नशीली चीज़ों का इस्तेमाल बढ़ रहा है। नग्नता, अश्लीलता और निर्लज्जता का बाज़ार गर्म है और इसे ऐब नहीं समझा जा रहा है। बल्कि एक अश्लील सभ्यता और अश्लील संस्कृति हर ओर डेरा डाले हुए है। ये सारी ख़राबियाँ भेष बदल-बदलकर नए-नए नामों से सामने आ रही हैं। छोटे लोग छोटे स्तर पर उनमें संलिप्त हैं और बड़े लोग ऊँचे स्तर पर यह अपराध कर रहे हैं। इन ख़राबियों ने व्यक्तियों ही को नहीं, समुदायों और राष्ट्रों को भी अपनी लपेट में ले रखा है। आतंकवाद और रक्तपात को समस्याओं का समाधान समझा जा रहा है। इनसान न्याय और इनसाफ़ से निराश दिखाई दे रहा है और भय और आतंक की परिस्थिति में जी रहा है। वह इन परिस्थितियों को बदलना चाहता है, लेकिन उसका कोई उपाय और इलाज उसके सामने नहीं है।

इस दुनिया में जब भी कोई फ़साद या बिगाड़ पाया गया या जो आज पाया जा रहा है उसका मूल कारण यह है कि इनसान ख़ुदा को भूल गया है, वह स्वयं को बे-नकेल ऊँट और हर बन्धन से मुक्त समझ रहा है। वह सोचता है तो ख़ुदा से बेपरवाह होकर सोचता है और कोई क़दम उठाता है तो ख़ुदा से निडर होकर उठाता है। आख़िरत के अक़ीदे ही में यह शक्ति है कि वह इनसान को ख़ुदा फ़रामोशी (ईशविमुखता) के भँवर से निकाले और उसके दुष्परिणामों से बचाए रखे। आख़िरत का अक़ीदा ख़ुदा से सम्बन्ध को जिस प्रकार सशक्त और मज़बूत बनाता है, इसका अनुमान क़ुरआन मजीद के इस बयान से हो सकता है कि अल्लाह के सबसे प्रिय बन्दे और सबसे श्रेष्ठ मानव हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) से कहा जा रहा है—

"इनसे कहो, क्या मैं अल्लाह के सिवा किसी और को अपना

संरक्षक और कार्यसाधक बना लूँ? वह अल्लाह जो आसमानों और ज़मीन का पैदा करनेवाला है, जो सबको खिलाता है और कोई उसे नहीं खिलाता। इनसे कहो कि मुझे तो यह आदेश दिया गया है कि मैं सबसे पहले उसका आदेश मानूँ, और कहा गया है कि तुम हरगिज़ शिर्क करनेवालों में से न हो जाओ। (जो दूसरों की उपासना और अल्लाह की अवज्ञा कर रहे हैं) उनसे कहो यदि कि मैं अपने रब की नाफ़रमानी (अवज्ञा) करूँ तो मुझे बड़े दिन के अज़ाब से डर लगता है। उस दिन जिस किसी से यह अज़ाब (यातना) टल गया उसपर अल्लाह ने बड़ी कृपा की, और यह स्पष्ट सफलता है।" (क़ुरआन 6 : 14-16)

ख़ुदा को भूलनेवाले इनसान के सामने सिर्फ़ दुनिया रह जाती है। वह उसी के लिए सोचता और युक्ति करता है। उसी के लिए उसकी संकल्पनाएँ और योजनाएँ होती हैं, उसी के लिए उसकी सारी भागदौड़ और संघर्ष होते हैं। उसके लिए वह उचित-अनुचित हर प्रकार के साधनों को काम में ला सकता है। अत्याचार और उत्पीड़न, छल-कपट, झूठ, ग़लतबयानी और रिश्वत, कोई भी तरीक़ा अपनाने में उसे कोई संकोच नहीं होता। वह दुनिया प्राप्त करने के लिए क्रूर और हिंसक पशु बन सकता है। उससे चोरी, डकैती और क़त्ल तथा लूटमार सब कुछ सम्भावित है।

दुनिया प्राप्त करना लक्ष्य बन जाए तो इनसान इच्छाओं का दास बन जाता है। इच्छाएँ उसे जिस ओर ले जाना चाहती हैं, ले जाती हैं। वह पेट की माँगों और वासना-उत्प्रेरक चीज़ों के पीछे सरपट दौड़ने लगता है। इनमें से कोई भी रोक-टोक उसे असहनीय लगने लगती है। इसी रास्ते में नग्नता, निर्लज्जता और अश्लीलता का बोलबाला होता है और आदमी प्रसन्नतापूर्वक पाशविक जीवन जीने लगता है।

आख़िरत की धारणा ही इनसान को दुनिया का पुजारी होने से बचा सकती है। आवश्यकता है कि यह सच्चाई मन और मस्तिष्क में पूरी तरह बैठ जाए कि यहाँ का जीवन अत्यन्त अल्प, यहाँ का भोग-विलास और भोग-विलास की सामग्री अत्यन्त सीमित, यहाँ के सुख-चैन और आराम नश्वर, यहाँ की हर सुन्दरता और यहाँ का हर आकर्षण क्षणिक व अस्थायी और बाक़ी न रहनेवाला है। इसकी तुलना में आख़िरत का जीवन शाश्वत और नश्वरहीन है, वहाँ की हर नेमत पतनहीन और शाश्वत है। वहाँ का सुख-चैन अपरिमित और वहाँ का भोग-विलास असीमित है, वहाँ किसी लालसा और असफलता का दूर-दूर तक पता नहीं है। वहाँ हर प्रकार की चाहत और हर इच्छा की पूर्ति का भरपूर सामान है; वहाँ वह सब कुछ है जिसे आँखों ने नहीं देखा, कानों ने नहीं सुना और जिसकी सुन्दरता और जिसके सौन्दर्य तक किसी की कल्पना न पहुँच सकी और न पहुँच सकती है। जब यह धारणा मस्तिष्क के क्षितिज पर उभरेगी और उसकी रौशनी फैलेगी तो कोई सन्देह नहीं कि ख़ुद-ब-ख़ुद यह दुनिया तुच्छ लगने लगेगी और इसकी खुबसूरती और आकर्षण ख़त्म हो जाएगा। आदमी सहसा आख़िरत की चाह में दौड़ने लगेगा। उससे बड़ा नादान कौन होगा जो यह सब कुछ जानते-बूझते इस नश्वर संसार के लिए आख़िरत का शाश्वत जीवन खो दे?

क़ुरआन मजीद ने दोनों जीवनों का चित्र इस प्रकार खींचा है —

"लोगों के लिए सुसज्जित कर दी गई है, अभिभूत कर देनेवाली चीज़ों की चाह अर्थात् औरतें, बच्चे, सोने-चाँदी के ढेर, चिह्न-युक्त घोड़े और चौपाए और खेती (जैसी चीज़ों) की चाह। ये दुनिया के जीवन की सामग्री है और अल्लाह ही के पास बेहतरीन ठिकाना है। इनसे कहो, क्या बताऊँ इससे बेहतर क्या चीज़ है? जिन लोगों ने अल्लाह का तक़्वा (भय)

अपनाया, उनके लिए उसके रब के पास ऐसी जन्नतें हैं जिनके नीचे नहरें बह रही होंगी और पाकीज़ा औरतें होंगी और अल्लाह की प्रसन्नता प्राप्त होगी। और अल्लाह बन्दों को देख रहा है।" (क़ुरआन 3 : 14-15)

क़ुरआन मजीद बार-बार याद दिलाता है कि यह दुनिया यथार्थहीन और अस्थायी है। वस्तुतः भरोसा तो केवल आख़िरत का है। इसलिए इस नश्वर दुनिया के लिए आख़िरत बरबाद न की जाए जो शाश्वत और हमेशा बाक़ी रहने वाली है। कहा गया है —

"तुम्हें जो कुछ भी दिया गया है वह सांसारिक जीवन की सामग्री है और जो कुछ अल्लाह के पास है वह (इससे) बेहतर भी है और बाक़ी रहनेवाला भी, उन लोगों के लिए जो ईमान लाए और अल्लाह पर पूरा भरोसा रखते हैं...।"

(क़ुरआन 42 : 36)

यह बात एक जगह और इन शब्दों में कही गई है —

"जो कुछ तुम्हारे पास है वह समाप्त हो जाएगा और जो कुछ अल्लाह के पास है वह (समाप्त न होगा, बल्कि) बाक़ी रहेगा, और सब्र करनेवालों को हम उनके अच्छे कर्मों का इनाम अवश्य देंगे।" (क़ुरआन 16 : 96)

आख़िरत की सफलता "महान सफलता" और वहाँ की असफलता "स्पष्ट घाटा" है। वह व्यक्ति सफल है जो इस "महान सफलता" को पा ले और वह अत्यन्त घाटे में है, जो वहाँ असफल हो जाए। उसके लिए सफलता के सारे रास्ते बन्द होंगे।

"हर जानदार को मौत का स्वाद चखना है, और क़ियामत के दिन तुम्हें पूरा-पूरा बदला मिलेगा, फिर जो जहन्नम की आग से

बचा लिया जाए और जन्नत में दाख़िल कर दिया जाए, वही सफल हुआ। और यह सांसारिक जीवन तो केवल धोखे का सामान है।" (क़ुरआन 3 : 185)

उस दिन सफलता पानेवालों से और असफल होनेवालों का उल्लेख एक जगह इन शब्दों में हुआ है —

"वज़न उस दिन ठीक-ठीक होगा, फिर जिनके पलड़े भारी होंगे वही सफलता पानेवाले होंगे और जिनके पलड़े हलके होंगे तो वे अपना नुक़सान करनेवाले होंगे, इस कारण कि वे हमारी आयतों के साथ ज़ुल्म कर रहे थे।" (क़ुरआन 7 : 8-9)

यही वह सच्चाई है जिसे हरदम निगाह में रखना चाहिए। इसे भुला देने के बाद आख़िरत की शाश्वत सफलता की सम्भावनाएँ समाप्त हो जाती हैं और केवल असफलता-ही-असफलता रह जाती है।

दुनिया के बिगाड़ और फ़साद को नित् नए क़ानूनों के द्वारा समाप्त करने का प्रयास किया जाता है। परन्तु क़ानून के द्वारा बिगाड़ समाप्त नहीं किया जा सकता। क़ानून प्रेम, सहानुभूति और निष्ठा पैदा नहीं कर सकता। इससे दिल जोड़े नहीं जा सकते। अच्छे-से-अच्छा क़ानून इनसान के अधिकारों की एक निश्चित सीमा तक ही रक्षा कर सकता है। इससे आगे वह विवश हो जाता है। क़ानून से न्याय की स्थापना में सहायता तो मिल सकती है, लेकिन इसके द्वारा अत्याचार और उत्पीड़न को पूर्णरूप से समाप्त करना असम्भव नहीं है। इसलिए कि इनसान दुनिया के हर क़ानून को तोड़ने का उपाय कर सकता है और उससे निकलने के हज़ार रास्ते निकाल सकता है। सही बात यह है कि दुनिया के बिगाड़ और फ़साद का हल इसके सिवा कुछ नहीं है कि इनसान के अन्दर आख़िरत का पक्का और पूर्ण यक़ीन हर समय मौजूद और

तरंगित रहे। वह इस सच्चाई को क़बूल करे कि वह ख़ुदा का बन्दा है। उसका आज्ञापालन और फ़रमाँबरदारी उसके लिए अनिवार्य है। अगर उसने उसकी आज्ञा का पालन किया तो अल्लाह की रहमत का हक़दार होगा और उसकी नेमतों से नवाज़ा जाएगा। और अगर उसने नाफ़रमानी की तो चाहे दुनिया में पकड़ से बच जाए, आख़िरत की पूछ-गछ और पकड़ से नहीं बच सकता। वहाँ उसे निश्चित रूप से अपने किए का दण्ड भोगना पड़ेगा। इस धारणा के जो प्रभाव पड़ते हैं और इनसान के आचरण-व्यवहार में जो ज़बरदस्त क्रान्ति आती है, वह इतिहास के पृष्ठों में सुरक्षित है। आज भी इस गौरवशाली इतिहास को दोहराया जा सकता है।

यह एक ऐसी जाति का इतिहास है जिसमें क़त्ल और रक्तपात, चोरी और डकैती, व्यभिचार और दुष्कर्म, शराब पीना और जुआ खेलना जैसे अपराध आम थे। ख़ुदा और आख़िरत के ख़ौफ़ ने पूरी तरह से उस क़ौम की काया पलट दी। उसी जाति ने इन अपराधों से इस तरह तौबा की कि उनकी ओर पलटकर देखना भी उसने पसन्द न किया। उसके अन्दर जान-माल और इज़्ज़त-आबरू का सम्मान पैदा हो गया और देखते-देखते पवित्रता और पाकीज़गी, अमानत और सच्चाई तथा नशीली वस्तुओं से परहेज़, जैसे गुणों से उसका दामन भर गया। अपराधों का ग्राफ़ इतना कम हो गया कि अल्लाह के रसूल (सल्ल०) और ख़ुलफ़ा-ए-राशिदीन के समय में उनके होने की कुछ घटनाएँ ही मिलती हैं। पूरा समाज उनसे सुरक्षित और शान्त दिखाई देता है। फिर यह जाति जो अनारकी और बे उसूलेपन की शिकार थी और किसी क़ानून का पाबन्द होना जिसके स्वभाव के विरुद्ध था; उसके अन्दर क़ानून और विधान के सम्मान की ऐसी भावना उत्पन्न हुई कि उसका कोई उदाहरण नहीं मिलता। आख़िरत के अज़ाब से बचने के लिए क़ानून के सामने ख़ुद को पेश करना और जान दे देना उसके लिए

आसान हो गया। निम्न घटनाएँ देखिए —

आसमान की आँखों ने यह आश्चर्यजनक घटना भी देखी है कि अल्लाह के रसूल (सल्ल०) मसजिद में बैठे हुए हैं। उसी समय एक व्यक्ति (हज़रत माइज़ बिन मलिक रज़ि०) आपकी सेवा में उपस्थित होता है और ऊँची आवाज़ में कहता है : "अल्लाह के रसूल ! मुझसे व्यभिचार जैसा गुनाह हो गया है। मुझे पाप-मुक्त कीजिए !" नबी (सल्ल०) ने उसकी ओर से मुँह फेर लिया। उस व्यक्ति ने जिधर आपका रुख़ था उसी तरफ़ पहुँचकर अपनी बात दोहराई। आपने उस तरफ़ से भी रुख़ फेर लिया। वह फिर उसी तरफ़ पहुँच गया। इसी प्रकार उसने चार बार अपने अपराध को स्वीकार किया। आपने उससे फ़रमाया : "हो सकता है तुमने चुम्बन लिया हो, या आँख से इशारा किया हो या केवल देखा ही हो और उसे व्यभिचार समझ रहे हो !" उसने कहा कि "नहीं, ऐसा नहीं है; बल्कि मैंने सचमुच व्यभिचार किया है। आप मुझे पाप-मुक्त कीजिए।" आप (सल्ल०) ने सहाबा (रज़ि०) से पूछा और उसके घरवालों से भी मालूम किया कि यह पागल तो नहीं है? अर्ज़ किया गया कि यह व्यक्ति पागल नहीं है। आप (सल्ल०) ने फ़रमाया : "इसने शराब तो नहीं पी रखी है?" एक व्यक्ति खड़ा हुआ और उसके निकट जाकर उसका मुँह सूँघा। उससे शराब की गंध नहीं आ रही थी। आपने उससे पूछा कि क्या तुम्हारी शादी हो चुकी है? उसने कहा : "हाँ।" तो फिर आपने उसे रज्म का आदेश दिया और उसे रज्म की सज़ा दी गई।

(हदीस : बुख़ारी, मुस्लिम)

रिवायत में आता है कि माइज़ की मौत के बाद किसी ने कहा

कि यह व्यक्ति अपनी बुरी हरकत के कारण मारा गया, तो किसी ने उसकी तौबा की तारीफ़ की। दो-तीन दिन तक इस घटना की चर्चा रही और उसपर विचार व्यक्त किए जाते रहे। उसके बाद अल्लाह के रसूल (सल्ल०) सहाबा (रज़ि०) की एक सभा में तशरीफ़ लाए और फ़रमाया: "माइज़ के लिए बख़्शिश की दुआ करो, उसने ऐसी तौबा की है कि पूरी क़ौम के बीच वह वितरित कर दी जाए तो वह सबके लिए पर्याप्त हो।"

(हदीस : मुस्लिम)

इसी प्रकार ग़ामिद क़बीले की एक औरत ने नबी (सल्ल०) की सेवा में उपस्थित होकर निवेदन किया कि मुझे पाप-मुक्त कर दीजिए। आप (सल्ल०) ने फ़रमाया : बुरा हो तुम्हारा ! जाओ अल्लाह से माफ़ी माँगो और तौबा करो।" उसने कहा : "शायद आप मुझे उसी प्रकार लौटाना चाहते हैं जिस प्रकार माइज़ को शुरू में लौटा दिया था। या आप यह चाहते हैं कि मैं किसी समय अपने बयान से फिर जाऊँ, मेरे तो गर्भ भी ठहर चुका है।" आपने फ़रमाया : "अच्छा तो जाओ, बच्चा पैदा होने की प्रतीक्षा करो।" एक अनसारी ने उस बच्चे का भार उठाने की ज़िम्मेदारी ली। जब बच्चा पैदा हो गया तो उन्होंने नबी (सल्ल०) को सूचना दी कि ग़ामिदी औरत का बच्चा पैदा हो गया है। आप (सल्ल०) ने फ़रमाया : "यह नहीं हो सकता कि हम उसे 'रज्म' कर दें और उसके छोटे बच्चे को इस तरह छोड़ दें कि उसे कोई दूध पिलानेवाला न रहे।" एक व्यक्ति ने कहा कि अल्लाह के रसूल ! इसके दूध पिलाने की ज़िम्मेदारी मुझपर है।

एक दूसरी रिवायत में है कि आपने उस औरत से कहा कि जाओ बच्चे की जब तक दूध पीने की उम्र है, उसे दूध पिलाओ। अतएव जब उसने उसका दूध छुड़ा दिया तो बच्चे को लेकर आई। उसके हाथ में रोटी का टुकड़ा था। कहा कि ऐ अल्लाह के नबी ! बच्चे ने दूध छोड़ दिया है। खाना खाने लगा है। आपने उस बच्चे को एक व्यक्ति के सुपुर्द किया और उसे 'रज्म' की सज़ा दे दी।

उस औरत को रज़्म करते समय हज़रत ख़ालिद बिन वलीद (रज़ि०) के चेहरे पर ख़ून के छींटे आ गए तो उसके सम्बंन्ध में हज़रत ख़ालिद की ज़बान से कुछ अपशब्द निकल गए। यह सुनकर आप (सल्ल०) ने फ़रमाया : "ख़ालिद ! रुक जाओ ! जल्दी में ग़लत बात न कहो इस औरत ने ऐसी तौबा की ही कि अगर अत्याचारपूर्वक लगान वुसूल करनेवाला शासक भी ऐसी तौबा करे तो उसकी बख़्शिश हो जाए।" एक रिवायत में है कि हज़रत उमर (रज़ि०) ने अल्लाह के रसूल (सल्ल०) से निवेदन किया कि क्या आप एक दुराचारी औरत की जनाज़े की नमाज़ पढ़ेंगे? आपने फ़रमाया : "उसने तो ऐसी तौबा की है कि मदीना के सत्तर लोगों में वह वितरित कर दी जाए तो सभी की मुक्ति के लिए पर्याप्त हो जाए। इससे बड़ी तौबा क्या हो सकती है कि उसने अपनी जान की भेंट दे दी।

(हदीस : मुस्लिम)

हज़रत उम्मे सलमा (रज़ि०) बयान करती हैं कि नबी (सल्ल०) की सेवा में दो आदमियों की विरासत सम्बन्धी (सम्भवतः ज़मीन सम्बन्धी) एक झगड़ा पेश किया गया। हर एक का दावा

था कि उसे यह चीज़ विरासत में मिली है। लेकिन दोनों में से किसी के पास कोई प्रमाण न था। आपने फ़रमाया : "हो सकता है कि तुममें से कोई अपनी बोलने और बात करने की महारत से अपनी बात प्रमाणित कर दे, लेकिन सोच ले कि मैं जिस व्यक्ति के पक्ष में फ़ैसला करूँ और कोई चीज़ उसके भाई के हिस्से में से उसे दे दूँ, तो जहन्नम का टुकड़ा उसके सुपुर्द कर रहा हूँ।" यह सुनकर दोनों कहने लगे : "ऐ अल्लाह के रसूल ! मैं अपना अधिकार छोड़ रहा हूँ। मेरा हिस्सा मेरे साथी का है।" आप (सल्ल०) ने फ़रमाया : "ऐसा न करो, बल्कि तुम दोनों जाओ, इसे बाँट लो और सच्चाई और न्याय का ध्यान रखो। फिर पाँसा डालकर एक-एक हिस्सा ले लो और उसमें कुछ कम-बढ़ हो जाए तो उसे एक-दूसरे के लिए वैध कर दो।" (हदीस : अबू दाऊद)

इस प्रकार की बहुत सी घटनाएँ हदीस की किताबों और इस्लामी इतिहास के पन्नों में मौजूद हैं जो यह सिद्ध करती हैं कि आख़िरत की पूछ-गछ और वहाँ के दण्ड और पुरस्कार की सोच ही इनसान के अन्दर विधान और क़ानून के सम्मान की भावना उत्पन्न करती और उसे पाबन्द बनाती है। इसके बिना क़ानून काग़ज़ की शोभा तो बना रहेगा, लेकिन अपने आपको विधान और क़ानून के समक्ष समर्पण करने और अपने व्यक्तित्व पर प्रभावी करने की भावना और साहस नहीं पैदा होगा। क़ानून का पाबन्द बनाने का कितना ही प्रयास क्यों न किया जाए, क़ानून के उल्लंघन करने को रोका नहीं जा सकता। क़ानून के द्वारा क़ानून की पकड़ न क़ायम हुई है और न हो सकती है।

यही डर और भय और यही आख़िरत की पकड़ का डर था कि

हज़रत उमर (रज़ि०) जैसा न्यायनिष्ठ और ईशपरायण (ख़ुदातरस) शासक अल्लाह के भय से काँपता रहता था। नबी (सल्ल०) के बाद भी आप (सल्ल०) के प्रतिष्ठित साथी (सहाबा रज़ि०) ने और ख़ुद हज़रत उमर (रज़ि०) ने जो महान कार्य किए हैं, एक सहाबी हज़रत अबू मूसा अशअरी (रज़ि०) ने हज़रत उमर से उनपर बदला व सवाब की सम्भावना ज़ाहिर की। इसपर फ़रमाया : "अगर मैं अल्लाह तआला के यहाँ बराबर-सराबर छूट जाऊँ तो भी काफ़ी है। (हदीस : बुख़ारी)

हज़रत अनस (रज़ि०) फ़रमाते हैं कि हज़रत उमर (रज़ि०) एक बाग़ में दाख़िल हुए। मेरे और उनके बीच एक दीवार की आड़ थी। मैंने सुना, वे बाग़ के बीच एकान्त में कह रहे थे : उमर बिन ख़त्ताब ! तुम मुसलमानों के शासक हो ! बहुत ख़ूब, बहुत ख़ूब ! ख़ुदा की क़सम, तुम्हें निश्चय ही ख़ुदा से डरकर चलना होगा अन्यथा (याद रखो उसकी यातना से बच नहीं सकोगे) वह तुम्हें अवश्य दण्ड देगा। (हदीस : मुवत्ता इमाम मालिक)

आख़िरत की यह धारणा अपनी पूरी शक्ति और ज़ोर के साथ जाग उठे तो इनसान के विचार और सोच, मनोभाव एवं अनुभूतियाँ, आचरण और चरित्र और जीवन-कर्मों पर उसका राज्य स्थापित हो जाएगा। उसके तेज से जीवन का हर पक्ष चमक उठेगा। इनसान का अल्लाह तआला से वास्तविक सम्बन्ध उत्पन्न होगा। उसकी आत्मा की व्याकुलता और बेचैनी दूर होगी। उसे सुकून और चैन की दौलत मिलेगी। इनसान पर इनसान का शासन ख़त्म होगा। हर ओर अल्लाह तआला का क़ानून चलेगा। उसका सम्मान स्थापित होगा। क़ानून तोड़ना और क़ानून का अनादर समाप्त होगा। इनसान कोई भी क़दम उठाने से पहले सोचेगा और हज़ार बार सोचेगा कि मौत सिर पर खड़ी

है और हिसाब का समय निकट है, मुझे बहुत जल्द सर्व जगत् के रचयिता और स्वामी के समक्ष उपस्थित होना और अपने कर्मों का हिसाब देना है। इस धारणा से दुनिया की दिशा बदल जाएगी। वह उत्पात, दंगे और अत्याचार व उत्पीड़न से मुक्त होगी। इनसान की सभी समुचित आवश्यकताएँ पूरी होंगी, लेकिन उसके लिए किसी का हक़ नहीं मारा जाएगा। चारों ओर शान्ति और सुकून होगा। भलाई फैलेगी, बुराई मिटेगी और अपराध की दुनिया पर पतझड़ जैसी वीरानी छा जाएगी। नेकियों का सदाबहार मौसम आएगा। नैतिकता का बोलबाला होगा। अनैतिकता का ख़ात्मा होगा और आदमी उसे अपनाने से ख़ुद शर्म महसूस करेगा। यह एक नई दुनिया होगी— कितनी ख़ूबसूरत और कितनी शानदार !